धरती पर सीमित है पानी

धरती पर सीमित है पानी

कुदरत का उपहार है पानी।
जीवन का आधार है पानी।।
वन-उपवन इससे लहराते।
धरती का श्रृंगार है पानी।।

गंगा माँ की धार है पानी।
जीवों पर उपकार है पानी।।
पंचतत्व से बना जगत है।
सृष्टि का आधार है पानी।।

नदियों की पहचान है पानी।
सब खेतों की जान है पानी।।
शस्य श्यामला बनती इस से।
धरती माँ की शान है पानी।।

उपमाओं से भूषित पानी।
देवों द्वारा पूजित पानी।।
मानव की ही करतूतों से।
आज हुआ है दूषित पानी।।

कर-कर के अपनी मनमानी।
भू-पर खूब बहाया पानी।।
भूल गये हम इसे बचाना।
पानी की कीमत न जानी।।

धरती पर सीमित है पानी।
व्यर्थ बहाते इतना पानी।।
बून्द-बून्द जल को तरसोगे।
मत करना ऐसी नादानी।।

पहले घर-घर मिलता पानी।
आज कहीं न दिखता पानी।।
नल, कुएँ सब पड़े हैं सूखे।
बोतल में बिकता है पानी।

अब तो भाई होश में आओ।
पानी को मत व्यर्थ बहाओ।
भावी पीढ़ी की भी सोचो।
बून्द-बून्द कर इसे बचाओ।।

पानी की कीमत जानो तुम

केवल जल-जल के रटने से,
जल कभी नहीं तुम पाओगे।
जब तक न पेड़ लगाओगे,
फल कभी नहीं तुम पाओगे।।

जल बना नहीं सकते हो तुम,
पर उसे बचा तो सकते हो।
जल से हरियाली कर धरती
तुम उसे सजा तो सकते हो।।

जल से ही होता है शीतल,
धरती का सुन्दर आंगन है।
पानी से सरसाता है,
सब पेड़ों का नव जीवन है।

कुछ दिन सूखा पड़ने से ही,
जल को हर जीव तरसता है।
जीवन मिल जाता है सब को,
बादल जब खूब बरसता है।।

जब-जब यह धरती तपती है,
बरसाता आग गगन देखो।
ऐसे में वर्षा का जल ही,
हरता हर ओर तपन देखो।।

धन से इस पानी की तुलना,
करना बिलकुल बेमानी है।
केवल धन का क्या कहना है,
सब से अमूल्य यह पानी।।

जल न मिलने से जीवन की,
समझो संध्या हो जायेगी।
कुछ भी न उगा सकोगे तुम,
धरती वंध्या हो जायेगी।।

फिर पछताये क्या होता है,
मेरा यह कहना मानो तुम।
अब भी है समय चेत जाओ,
पानी की कीमत जानो तुम।।

पेड़ लगाओ देश बचाओ, पेड़ लगाओ जीवन बचाओ, जीवन खुश हाल बनाओ.

'भव सागर को पार करेंगे'

सृष्टि जल से, पोषण जल से, महाप्रलय भी है जल से।
आदि, अन्त, मध्य दुनिया का, होता आया है जल से।।
कुएँ, बावड़ी ताल-तलैया, नदियाँ सागर हैं जल से।
फूल, लताएँ, पौधे-पादप, जीवन पाते हैं जल से।।

जल से है जीवन सरसाता, जल से देखो लाभ अनेक।
जल से ही जीवन पाते हैं, जल के जन्तु जीव अनेक।।
जल से ही है गंगा मइया, जल से बनती नदी अनेक।
जल से ही होता है तर्पण, जल से ही होता अभिषेक।।

जल से ही है भोजन पचता, जल ही हरता रक्त विकार।
निर्मल जल से हो जाता है, सारे रोगों का उपचार।।
जल पर ही निर्भर करते हैं, जन-जीवन के सब व्यापार।
जल जीवन का मुख्य तत्व है, जल की महिमा अपरम्पार।

ताल-तलैया-कुएं-बावड़ी, सूख रही हैं नदियाँ सारी।
जहाँ कहीं भी थोड़ा जल है, उस पर है प्रदूषण भारी।।
गन्दा ही गन्दा है पानी, उसको पीना है लाचारी।
दूषित जल से फैल रही, गाँव, शहर, घर-घर बीमारी।।

लेना है संकल्प सभी को, जल को दूषित नहीं करेंगे।
बून्द-बून्द को जोड़-जोड़ कर, हम पानी की बचत करेंगे।।
रोज साफ कर-कर के जल को, गंगा माँ की पीर हरेंगे।
गंगा माता की कृपा से, भवसागर को पार करेंगे।।

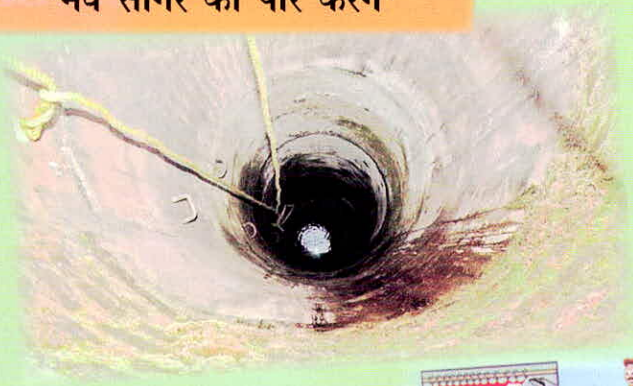

संपर्क करें:
रूप किशोर गुप्ता
गोला गंज बहजोई (सम्भल), उ.प्र.-244410
मो.न. 9368218205